RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

आधे अधूरे नाटक के नायक का चारित्रिक मूल्यांकन

प्रा. उत्तम ओंकार येवले

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पद्मश्री विखे पाटील महाविद्यालय (लोणी), प्रवरानगर, तहसील राहाता जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :

आधे अधूरे मोहन राकेश का एक महत्त्वपूर्ण नाटक है। इस नाटक का नायक महेंद्रनाथ हैं। इसका नाटक की कथावास्तु से नाटकीय घनिष्ठ संबंध है। पुरुष एक अर्थात महेंद्रनाथ नाटक का मुख्य पात्र है। उसके पत्नी का नाम सावित्री है। इस इस दाम्पत्त्य की तीन संताने हैं। बड़ा लड़का अशोक जो कि इक्कीस साल का हैं। बिन्नी बीस साल की युवती है और किन्नी तेरह साल की लड़की है। महेंद्रनाथ की आयू पचास को पार कर रही है। वह पतलून और कमीज धारण किए एक साधारण पुरुष के रुप में हमारे सामने आता है। महेंद्रनाथ निठल्ला व्यक्ति है। अपने अनुत्तरदायित्त्व के कारण अपने परिवार में वह उपेक्षा का पात्र बन जाता है। अपने ही घर में वह पराया है। राकेश ने इसे उस वर्ग के प्रतिनिधि के रुप में प्रस्तुत किया है जो अपने निठल्लेपण और घरघुसरेपण के कारण परिवार का मुखिया होते हुए भी अपमान जनक जीवन व्यतीत करने को विवश है। सावित्री के विचारों से वह कुढता हैं। आवारापण के कारण उसे अपमानित करता है। अंत में वह अपनों से ही परेशान होकर घर छोड़क चला जाता हैं किंतु फिर भी वह सावित्री को छोड़ नहीं पाता और दिल का दौरा पड़ने की स्थिति में भी लंगड़ाते, गिरते हुए फिर उसी घर में लौट आता हैं। उसका व्यक्तित्त्व सपाट है। केवल एक घर छोड़नेवाले प्रसंग के आातिरिक्त कोई भी माणसिक घात प्रति—घात उसके परित्र में दृष्टिगोचर नहीं होता। वह नाटक के प्रारंभ में ही एक टूटे हुए व्यक्ति के रुप में दिखाई देता है। महेंद्रनाथ के चरित्र की अनेक विशेषताएँ इस नाटक में चित्रित है। उनमें १ टूटा हुआ व्यक्ति २ जिगरी दोस्त ३ भाउक व्यक्ति ४ निठपालन ५ आत्मविश्वांस रहीत व्यक्तित्त्व ६ अनिश्चितता भरा व्यक्तित्त्व ७ निर्णय क्षमता का अभाव ८ संस्कारहीन व्यक्ति ९ पत्नी का प्रेम १० शंकालु ११ इर्ष्यालु १२ कुंठाग्रस्त आदि शामिल है। यद्यापि वह नाटक का नायक हैं— किंतु अपने पूर्व परंपरा के नायकों के गुणों से रहित सर्वथा निकृष्ठ चरित्र सपन्न व्यक्ति है। नाटककार ने प्रस्तुत नाटक में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाकर उसे पृष्ठ भी किया है। महेंद्रनाथ तो वर्तमान जीवन की विसंगतियों की प्रत्यक्ष भोक्ता है न केवल भोक्ता वरन उन क्रुर विसंगतियों का शिकार भी है। मोहन राकेश ने महेंद्रनाथ के चरित्र की जिन विशेषताओं के साथ चित्रित किया है वे विशेषताएँ इस प्रकार है—

ईमानदारी महेंद्रनाथ:—

महेंद्रनाथ और जुनेजा में गहरी दोस्ती है। वह हमेशा काम करते समय जुनेजा से राय लेता ह। यह अपने इस जिगरी मित्र से रुपये—पैसे भी उधार लेता है। महेंद्रनाथ की पत्नी सावित्री का मानना है कि उसने ही महेंद्रनाथ को बरबाद किया है। महेंद्रनाथ अपने दोस्त के प्रति सहानुभूति दर्शाते हुए कहाता है —''तुम नाहक कोसती रहती हो उस आदमी को। उसने तो अपनी तरफ से हमेशा मेरी मद्द ही की है।'' १ इस तरह महेंद्रनाथ अपने मित्र के सहकार्य को भूला नहीं है। कठिन समय में जिसने मद्द की है उसे पैसे वापस करने नही बना तो कम से कम उसे मिलकर वास्तविक परिस्थिति बताना भी वह नहीं भूलता हैं। जब से शादी हुई है तब से हर बात पर महेंद्रनाथ ने जुनजा से राय ली है। सावित्री को यह राय लेने का मामला पसंद नहीं है। वह कहती हैं—''कोई छोटी से छोटी चीज खरिदनी है तो भी जुनेजा की पसंद से कोई बड़े—से बड़ा खतरा उठाता है—तो भी जुनेजा की सलाह से यहॉ तक की मुझसे व्याह करने का फैसला भी कैसे किया उसने? जुनेजा के हामी भरने से''२ इस तरह इन दोनों मित्रों में एक दूसरे पर अटूट विश्वास है। अंतएव राकेश ने महेंद्रनाथ को एक ईमानदार दोस्त के रुप में चित्रित किया है।

निठल्ला महेंद्रनाथ:—

महेंद्रनाथ एक बेरोजगार व्यक्ति है। पहले वह जीविकापार्जन की दृष्टि से धनोपार्जन करता था। इसीलिए तो एक सरल मेहनती होनहार नायक के साथ सावित्री ने विवाह किया था। विवाहोपरांत अनेक कारणों से अपने पास की जमा पूजी महेंद्रनाथ गवॉ बैठा था। उसकी पत्नी सावित्री का मानना है कि दोस्तो के चक्कर में ही उसने धन बरबाद किया है। जिस किसी भी मित्र के साथ व्यावसाय शुरु किया तो उसके पैसे शुरु में ही निकाल कर खर्चा कर देता था। किसी व्यावसाय में उसे कामयाबी हासिल नहीं होती। सवित्री अपने इस निठल्ले पति के साथ अनादर एवं उपेक्षा की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दृष्टि से बर्ताव करती है। जब तब उसे लक्ष्य बनाकर ताने कसते रहती है। वह कहती है– ''एक आदमी है जो घर का सारा पैसा डूबोकर सालों से हाथ पर हाथ धरे बैठा है। दूसरा अपनी कोशिश से कुछ करना तो दूर मेरे सर फोड़ने से भी किसी ठिकाणे लगना अपना अपमान समझता है।''३ इस प्रकार सावित्री अपने पति के निकम्मेपण को कोसते रहती है। सावित्री का बेटा अशोक भी अपने पिता की तरह निठल्ला है। जिधर–उधर से सावित्री अशोक को नोकरी पर लगाती है लेकिन वह कुछ ही दिनों में घर चले आता है। इस प्रकार बाप –बेटे के निकम्मेपण के कारण सावित्री को मजबुरन नौकरी करनी पड़ती है। उसकी भाग–दौंड भरी जिंदगी में वह अपने पति के इस निकम्मेपण के कारण बुरी तरह बौखला उठती हैं।

आत्म विश्वास रहित महेंद्रनाथ:–

महेंद्रनाथ आरंभ से ही आत्मविश्वास रहित व्यक्ति रहा है। वह हर काम करते समय किसी न किसी व्यक्ति का सहारा लेते पाया गया है। उसकी पत्नी का मानना है कि उससे शादी करने का फैसला जुनेजा के हामी भरने से ही किया था। अब दिन ब दिन कुछ करने की क्षमता महेंद्रनाथ में नहीं रहीं है। उसका आत्मविश्वास पूरी तरह नष्ट हो गया हैं। अब वह किसी भी बात के लिए दूसरों पर अवलंबित रहता हैं। यही बात सावित्री को नागुजर लगती है। वह गुस्से में आकर अनाप–शनाप बकते रहती है। वह पुरुष चार से कहती है– '' और उस भरोसे का नतीजा?... कि अपने–आप पर उसे कभी किसी चीज के लिए भरोसा नहीं रहा।''४ इस तरह महेंद्रनाथ आत्मविश्वास रहित नायक है।

पत्नी का प्रेमी महेंद्रनाथ:–

महेंद्रनाथ अपनी पत्नी का आशिक है। वह शुरु से ही अपनी पत्नी के प्रति विनम्र दिखाई देता हैं। उसकी पत्नी उसे हर बार झिड़कती है फिर भी वह यह सब भिगी बिल्ली की तरह सह लेता है। वह हमेशा अपनी पत्नी की हर बात को पूरी करने के लिए तत्पर पाया गया हैं। उसने अपनी औकात से ज्यादा पत्नी पर खर्चा किया है। वह हर समय अपने पत्नी का मन रखने की कोशिश करता है। पुरुष चार महेंद्रनाथ की बड़ी लड़की से इस संदर्भ में कहता है– ''कोई समझा सकता है उसे? वह इस औरत को इतना चाहता है, इतना चाहता है अन्दर से कि...।''५ अत: स्पष्ट हो जाता है कि महेंद्रनाथ अपनी पत्नी का आशिक है। चाहे जो हो जाए वह लौटकर घर ही आता है। पत्नी के प्रेम में फिजूल खर्चा और आय व्यय का हिसाब न रखने के कारण महेंद्रनाथ की आर्थिक स्थिति दिन ब दिन गिरते ही चली जाती है।

शंकालू महेंद्रनाथ:–

महेंद्रनाथ के चरित्र की मुख्य विशेषता है शकालुपण। वह अपनी पत्नी सावित्री को हृदय से प्रेम करता है लेकिन उसके प्रति वह सदैव शंकालू बना रहता है। सावित्री अपने एक मात्र बेटे अशोक को नौकरी पर लगाने के लिए अनेक लोगों को वह अपने घर पर बुलाती है। उनके साथ रात–बिरात पार्टियों में जाती है। इस बात पर महेंद्रनाथ को बुरा लगता हैं। वह सावित्री को चरित्रहीन करार देता है। जब भी कोई व्यक्ति घर पर आता है तो महेंद्रनाथ का हृदय जलकर राख हो जाता है। सावित्री का बॉस सिंघानियॉ जब घर आता है तब घर के सभी सदस्य एक–दूसरे की ओर शंकालू दृष्टि से देखते है। सिंघानिया के जाने के बाद सावित्री और महेंद्रनाथ के बीच का संवाद सुनते नहीं बनता। वह कहता है –''पुरुष एक कहता है हॉऽऽ सिंघानिया तो लगवा ही देगा जरुर इसलिए बेचारा चलकर आता है यहॉ। स्त्री शुक्र नहीं मनाते कि एक इतना बड़ा आदमी सिर्फ एक बार कहने भर से। पुरुष एक कहता है– मैं नहीं शुक्र मनाता? जब–जब किसी नये आदमी का आना–जाना शुरु होता है यहॉ मैं हमेशा शुक्र ही मनाता हूँ। पहले जग मोहन आया करता था फिर मनोज आने लगा था।''६ इस प्रकार इस नाटक में अनेक स्थानों पर महेंद्रनाथ की इस शकालुवृत्ति का चित्रण दिखाई देता है। बड़ी बेटी बिन्नी के घर आने की बात पर भी वे शक जताते हैं। मनोज के रहन–सहन की श्रृंगारिक दृष्टि से भी वे शंकित थे। अंत में उनका यह शक सही भी निकलता है। अत: राकेश ने महेंद्रनाथ को 'आधे अधूरे' नाटक में शंकालु नायक के रुप चित्रित किया है।

इर्ष्यालू महेंद्रनाथ:–

'आधे अधूरे' नाटक का नायक महेंद्रनाथ शंकालु के साथ साथ इर्ष्यालु भी है। उसे सावित्री के चरित्र पर संदेह होता है। सावित्री के संपर्क में जो लोग आते हैं उनसे उसे इर्ष्या भी होती हैं। जब कोई व्यक्ति उसके घर आता है तब वह जलकर राख हो जाता है और उठकर बाहर चला जाता है। कोई ना कोई बहाना बनाकर बाहर चले जाने की बात ही उसके ईर्ष्या वृत्ति का ही परिचायक है। सावित्री और सिंघानिया की बातें सुनते समय वह फाईलों की उठा पटक करता है क्योंकि वह सिघानियॉ से जलता है। वह इस बात से भी जलता है कि सावित्री के संपर्क में आनेवाले व्यक्ति महेंद्रनाथ की अपेक्षा प्रतिष्ठित सम्माणित और उॅचे पदवाले लोग होते हैं। महेंद्रनाथ अपनी इस ईर्ष्या भावना का प्रदर्शन स्वंय ही कर देते हैं। अत: वे सावित्री से कहते हैं – ''अधिकार, रुतबा, इज्जत, यह सब बाहर के लोगों से मिल सकता है इस घर कोय।

इस घर का आज तक कुछ बना है, या आगे बन सकता है, तो सिर्फ बाहर के लोगों के भरोंसे मेरे भरोंसे तो सबकुछ बिगड़ता आया है और आगे बिगड़ ही बिगड़ सकता है।''७ इस प्रकार इस नाटक में राकेश ने महेंद्रनाथ की ईर्ष्यालु वृत्ति का चित्रण किया है।

भाउक महेंद्रनाथः—

महेंद्रनाथ अत्यधिक भावुक व्यक्ति है। सावित्री के व्यवहार से क्षुब्ध आवश्य है लेकिन वह उसके बिना जी नहीं सकता। अपनी पत्नी की बातों और व्यवहार से वह घर छोड़कर जुनेजा के यहॉ चला जाता है लेकिन वहॉ उसे चैन नहीं आता। वह आग्रह करके जुनेजा को अपने घर भेज देता है कि जुनेजा सावित्री को समझाए। लेकिन वह इंतजार नहीं कर सकता। महेंद्रनाथ क्रोध के कारण घर छोड़कर बिन बताए जाता है लेकिन अंत मैं वापस भी लौट आता है। वह अपने घर परिवार के बिना नहीं जी सकता। इस तरह राकेश ने महेंद्रनाथ का चरित्र भाउक व्यक्ति के रुप में चित्रित किया है।

छटपटाहट से युक्त महेंद्रनाथः—

महेंद्रनाथ आरंभ में ही व्यवसाय में हार जाता है। पत्नी के बर्ताव ने उसे घायल कर दिया है। उसे बात—बात पर अपमानित होना पड़ता है। उसकी संताने उस पर ही ताने कसती है। यह देखकर महेंद्रनाथ अंदर ही अंदर तड़पड़ता है। वह अपने—आपको रबर का घिसा हुआ टूकडा समझता है। सावित्री के कर्मो के कारण वह अंदर ही अंदर तड़पता है। सच जानने की उनकी अंदर की छटपटाहट स्पष्ट दिखाई देती है। महेंद्रनाथ की बड़ी लड़की ने मनोज के साथ भागकर प्रेमविवाह किया है। कुछ ही दिनो में वह वहॉ से वापस घर आ जाती है। महेंद्रनाथ इस बात से बहुत दुखी है कि उसकी लड़की इस तरह से बार—बार घर वापस क्यों आती है? पति —पत्नी में ऐसी क्या वजह है कि उनमें नहीं बन रही है। यह वह एक पिता होने के नाते जानना चाहता है। महिंद्रनाथ अपनी पत्नी के द्वारा बात चलाता है फिर भी जब बिन्नी सही उत्तर नहीं देती तब महेंद्रनाथ कहता है— ''आदमी जो जवाब दे, वह उसके चेहरे से भी तो झलकना चाहिए।''८ इस तरह महेंद्रनाथ अपने परिवार की हालात देखकर छटपटाता रहता है।

टूटा हुआ महेंद्रनाथः—

मोहन राकेश ने 'आधे अधूरे' नाटक नायक महेंद्रनाथ को एक टूटे हुए, हारे हुए नामक के रुपमें चित्रित किया है। महेंद्रनाथ के घर की हालत दिन ब दिन गिरते ही चली जाती है। वह अपनी परिस्थिति को सुधारने की बहुत कोशिश कारता है। अंत में असफलता के अतिरिक्त उसके हाथ कुछ नहीं आता। वह स्वंय कहता है—''अपनी जिन्दगी चौपट करेन का जिम्मेदार मैं हूॅ तुम्हारी जिन्दगी चौपट करने का जिम्मेदार मैं हू। इन सब की जिन्दगियॉ चौपट करने का जिम्मेदार मैं हू। फिर भी मैं इस घर से चिपका हूॅ क्योंकि अन्दर से मैं आरामतलब हूॅ, घर घूसरा हूॅ, मेरी हड्डियों में जंग लगा है।''९ इस तरह महेंद्रनाथ टूटकर, हारकर, बिखर गया है।

संस्कारहीन महेंद्रनाथः—

महेंद्रनाथ संस्कारहीन नायक है। उसने अपनी मर्जी से सावित्री से शादी की है। उसने जब भी किसी व्यवसास में पैसे लगाए तब उसे घाटा ही सहना पड़ा है। उसकी आर्थिक हालात नाजूक से बदतर हाते ही जाती है। सावित्री के अनेक पुरुषों के साथ संबंध है। उसकी बडी बेटी बिन्नी अपनी ही मॉ के पूर्व प्रेमी साथ भाग जाती है, और अंत में वापस आ जाती है। महेंद्रनाथ के बेटे अशोक का पड़ोस की लड़की से अनैतिक संबंध है। छोटी लड़की किन्नी १३ साल की आयु में ही बाजारु सेक्स संबंधी किताबे पढ़ती है। वह अपने ही बडे भाई अशोक को शोकी—शोकी कहकर चिढाती है। अशोक अपनी मॉ सावित्री से कहता है —''तुम्हारा बॉस न होता, तो उस दिन मैं कान से पकड़कर घर से निकाल दिया होता। सोफे पर टॉग पसारे आप सोच कुछ रहें हैं, जॉघ खुजलाते देख किसी तरफ रहे हैं और बात मुझसे कर रहे है . . . अच्छा यह बातइए कि आपके राजनैतिक विचार क्या है? राजनीतिक विचार है मेरी खुजली और उसकी मरहम।''१० इस तरह सावित्री ने अपने बेटे की नौकरी के लिए अनेक लोगों के साथ संबंध बनाए, उनके घर पार्टियों में गई और कुछ लोगों को वह अपेन घर पर बुलाती है। घर पर इन लोगों को बुलाने पर पास—पड़ोस में इसकी चर्चा होती है। लोगों का इसकी तरफ देखेन का नजरिया ही बदल जाता है। सावित्री के बेटे बेटियों की तरफ वे शक की नजर से देखते हैं। अशोक अपनी ही मॉ को भला बुरा कहता है। यह सुनकर सावित्री अपने आपसे बाहर होकर कहती है—''अगर मैं कुछ खास लोगों के साथ संबंध बनाकर रखना चाहती हूॅ, तो अपने लिए नहीं, तुम लोगों के लिए।''११ इस प्रकार इस घट में असंस्कारहीनता का प्रदर्शन होता है। कुल मिलाकर इस नाटक के नायक के चारित्र मूल्यांकन करते समय उनके चारित्र की अनेक विशेषताए दृष्टिगोचार होती है।

उपसंहारः—

मोहन राकेश द्वारा लिखित नाटक 'आधे अधूरे' एक मह त्त्वपूर्ण रचना है। इस नाटक में

महानगरीय मध्यवर्ग को ध्यान में रखकर उनके संघर्षशील जीवन को चित्रित किया है। आधुनिक युग में मध्यवर्ग का जीवन स्तर वैचारिकमूल्य जीवनमूल्य, सांस्कृतिकमूल्य किस तरह गिरते जा रहे हैं इसका उत्तम उदा. यह नाटक हैं। इस नाटक का नायक महेंद्रनाथ मध्यवर्ग का प्रतीक हैं। उसके निठल्लेपण के कारण घर की आर्थिक स्थिति दिन ब दिन बिघड़ती ही जाती है। उसकी पूर्ति हेतु सावित्री नोकरी करती है। इसके परिणाम स्वरुप दफ्तरों क कंपनियों के अफसरों का मन रखने के हेतु और अपने लडके को नोकरी दिलवाने के हेतु वह रात–बिरात पार्टियों में शामिल होती है। उनकी मिन्नते करती है। उन्हें घर पर बुलाती है। अफसरों के घर पर आने–जाने के कारण वह पति, परिवार और पडोसी की दृष्टि में बदचलन औरत कहलाती है। परिणाम स्वरुप महेंद्रनाथ की उपेक्षा होती है। वह अपमान का शिकार बन जाता है। इस नाटक में महेंद्रनाथ के चरित्र का सपाट चित्रण उपस्थित है। संक्षेप में महेंद्रनाथ के चरित्र का सम्यक अध्ययन करने के उपरांत यही कहा जा सकता कि उनके चरित्र मूल्यांकन में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई गई है– ईनामदार महेंद्रनाथ, निठल्लापण, आत्मविश्वास रहित, पत्नी का प्रेमी, शंकालू, ईर्ष्यालु, भावुक, छटपटाहट, टूटा हुआ, संस्कार हीन। अपर्युक्त विशेषताओं के कारण ही महेंद्रनाथ यशस्वी नायक बन नहीं पाया। इसीलिए वह अपने परिवार में मान–सम्मान के लायक नहीं बचा। वह हमेशा उपेक्षा और अपमानित होता रहा। इस अपमान के लिए वह स्वयं जिम्मेदार है।

संदर्भ सूची:–

1. मोहन राकेश अधे अधूरे पृ.सं. १८
2. वहीं पृ.सं.७
3. वहीं पृ.सं.१५
4. वहीं पृ.सं.१८
5. वहीं पृ.सं.२२
6. वहीं पृ.सं.२०
7. वहीं पृ.सं.३७
8. वहीं पृ.सं.२५
9. वहीं पृ.सं.२७
10. वहीं पृ.सं.३५
11. वहीं पृ.सं.४०

RRIJM 2015, All Rights Reserved